माया की परतंत्रता से मुक्ति

1 परतंत्रता सदैव नीचे की ओर ले जाएगी अर्थात् उतरती कला की तरफ ले जायेगी।

2 परतन्त्रता कभी भी अतीइन्द्रिय सुख के झूले में झूलने का अनुभव नहीं करने देगी।

3 किसी न किसी प्रकार के बन्धनों में बंधी हुई परेशान आत्मा अनुभव करेंगे, बिना लक्ष्य, बिना कोई रस, नीरस स्थिति का अनुभव करेंगे।

4 सदा स्वयं को अनुभव करेंगे - न किनारा, न कोई सहारा स्पष्ट दिखाई देगाय न गर्मी का अनुभव, न खुशी का अनुभव - बीच में भंवर में होंगे।

5 कुछ पाना है, अनुभव करना है, चाहिए-चा. हिए में मंजिल से अपने को सदा दूर अनुभव करेंगे। यह है पिंजरे के पक्षी की स्थिति।

अव्यक्त पालना का रिटर्न

26.04.77

प्रश्न हमारे,
उत्तर बापदादा के

प्रश्न : मीठे बाबा, परतंत्रता से मुक्त बनने के लिए अव्यक्त इशारे क्या हैं?

उत्तर : मीठे बच्चे, परतंत्रता से मुक्त बनने के लिए अव्यक्त इशारे हैं:-

---

1. जो अपने आपको स्वतंत्र नहीं कर सकते, स्वयं ही अपनी कमजोरियों में गिरते रहते वे विश्व परिवर्तक कैसे बनेंगे।

---

2. अपने बन्धनों की सूची (List) सामने रखो। सूक्ष्म-स्थूल सबको अच्छी रीति चैक करो।

---

3. अब तक भी अगर कोई बन्धन रहा है तो बन्धनमुक्त कभी भी नहीं बन सकेंगे।

---

4. 'अब नहीं तो कब नहीं!' सदा यही पाठ पक्का करो।

---

5. स्वतंत्रता ब्राह्मण जन्म का अधिकार है। अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करो।

26.04.77

मन की बात... बापदादा के साथ
मैं आत्मा :-
प्यारे बाबा, अमृतवेले के विषय में कुछ बताइए?
बापदादा :-
मीठे बच्चे,
रोज अमृतवेले बाप वरदान देते हैं; अगर रोज वरदान लेते रहो तो कभी भी कमज़ोर नहीं हो सकते।
वरदान लेने के सिर्फ पात्र बनना। जो भी चाहिए अमृतवेले सब मिल सकता है।
ब्राह्मणों के लिए स्पेशल (Special;विशेष) समय फिक्स (Fix;नियुक्त) है। जैसे कितना भी कोई बड़ा आदमी हो, लेकिन फिर भी अपने फैमली (परिवार) के लिए विशेष टाईम (समय) जरूर रखेंगे।
अमृतवेला विशेष बच्चों के प्रति है, फिर विश्व की आत्माओं प्रति।
पहला चान्स बच्चों का है। इसमें अलबेले नहीं बनना।
26.04.77

26 - 4 - 77
अव्यक्त वाणी का
मुख्य बिंदु
मै
स्वतंत्र
आत्मा हूँ
परतंत्रता कभी भी अतिइंद्रिय सुख के झूले
मे झूलने का अनुभव नही करने देगी

26-04-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं स्वतन्त्र आत्मा हूँ।

स्वतन्त्र अर्थात्

पुरानी देह, पुराने स्वभाव संस्कार व प्रकृति के अनेक प्रकार के आकर्षण से मुक्त्त। सदा चढ़ती कला।अति इन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाली ।

26-04-77

स्वतन्त्रता ब्राह्मणों का जन्म-सिद्ध अधिकार है

अब बाप आ करके पिंजरे से मुक्त करते हैं।

- अपना स्वतंत्र-दिवस मनाओ।
- अपने बन्धनों की सूची (List) सामने रखो। सूक्ष्म-स्थूल सबको अच्छी रीति चैक करो।
- अब तक भी अगर कोई बन्धन रहा है तो बन्धन मुक्त कभी भी नहीं बन सकेंगे। 'अब नहीं तो कब नहीं!' सदा यही पाठ पक्का करो। स्वतंत्रता ब्राह्मण जन्म का अधिकार है।